डॉ जीतेंद्र कुमार होता
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध उत्सव एवं महोत्सव

बस्तर लोकोत्सव –यह लोकोत्सव राज्य के आदिवासियों द्वारा मनाया जाने वाला प्रमुख त्यौहार लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह लोकप्रिय उत्सव वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद मनाया जाता है आदिवासी लोगों के गीत और नृत्य देखे जाते हैं।

बस्तर दशहरा– छतीसगढ़ का प्रमुख त्यौहार है। इस त्यौहार की सबसे अनोखी बात यह है की दशहरा पुरे भारत में भगवान राम के लौटने की खुशी में मनाया जाता है जबकि छतीसगढ़ का बस्तर दशहरा देवी दंतेश्वरी मंदिर में विशेष पूजा समारोह आयोजित करते हैं।

मड़ई महोत्सव –यह महोत्सव छत्तीसगढ़ के प्रमुख त्यौहार में से एक है जिसे मुख्य रूप से गोंड जनजाति के लोगों द्वारा बहुत उत्साह के साथ मानते है। यह त्योहार दिसंबर के महीने से मार्च के महीने तक मनाया जाता है।

गोंचा महोत्सव –गोंचा महोत्सव छत्तीसगढ़ राज्य में मनाया जाना वाला एक और लोकप्रिय उत्सव है जिसे छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के जगदलपुर में मनाया जाता है।

भोरमदेव महोत्सव –भोरमदेव महोत्सव छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध उत्सव में से एक है। यह उत्सव मार्च के अंत में षुरू होता है जिसमे छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से लोक कलाकार भाग लेते हैं और कलायों का प्रदर्शन करते है।

अरपा महोत्सव– दिसंबर–जनवरी माह में बिलासपुर में मनाया जाता है।

बिलासा महोत्सव– जनवरी–मार्च माह में बिलासपुर में मनाया जाता है।

रतनपुर महोत्सव– जनवरी–मार्च माह में बिलासपुर में मनाया जाता है।

भक्तिन माता राजिम– जनवरी माह में राजिम में मनाया जाता है।

मैनपाट महोत्सव– जनवरी माह में मैनपाट–सरगुजा में मनाया जाता है।

कबीर पंथ महोत्सव– जनवरी माह में दामा बलौदा बाजार में मनाया जाता है।

महेशपुर महोत्सव– जनवरी माह में महेशपुर–सरगुजा में मनाया जाता है।

सिरपुर महोत्सव –फरवरी माह में सिरपुर में मनाया जाता है।

जाज्वल्यदेव लोक महोत्सव–फरवरी माह में जांजगीर–चांपा में मनाया जाता है।

कर्णेष्वर उत्सव– फरवरी माह में सिहावा–धमतरी में मनाया जाता है।

नामांकित महोत्सव– फरवरी माह में गांडाई–राजनांदगांव में मनाया जाता है।

डोंगरगांव लोकोत्सव– फरवरी माह में डोंगरगांव में मनाया जाता है।

मदकूदीप महोत्सव– फरवरी माह में मुंगेली में मनाया जाता है।

चितावरी महोत्सव– फरवरी–मार्च माह में धोबनी बलौदाबाजार में मनाया जाता है।

मल्हार महोत्सव फरवरी माह में मल्हार–बिलासपुर में मनाया जाता है।

कपिलेश्वर महोत्सव, फरवरी माह में बालोद में मनाया जाता है।

भोरमदेव महोत्सव मार्च माह में भोरमदेव में मनाया जाता है।

देवबलोदा महोत्सव मार्च माह में चरौदा–भिलाई में मनाया जाता है।

डोगरगढ़ महोत्सव मार्च माह में राजनान्दगांव में मनाया जाता है।

पाली महोत्सव मार्च माह में पाली कोरबा में मनाया जाता है।

फाल्गुन उत्सव, मार्च–अप्रैल माह में दंतेवाड़ा में मनाया जाता है।

कुदरगढ़ महोत्सव– मार्च माह में सरगुजा में मनाया जाता है।

सिगारपुर मावली उत्सव, अप्रैल माह में भाटापारा बलौदाबाज में मनाया जाता है।

मंदराजी महोत्सव, अप्रैल माह में रवेली–राजनंदगांव में मनाया जाता है।

खल्लारी –अप्रैल माह में महोत्सव, खल्लारी–महासमुंद में मनाया जाता है।

चौत्रगढ़ महोत्सव अप्रैल माह में चौतूरगढ़–कोरवा में मनाया जाता है।

सुकमा मड़ई उत्सव, अप्रैल माह में सुकमा में मनाया जाता है।

नागपुरा महोत्सव, अप्रैल माह में दुर्ग में मनाया जाता है।

कर्मा महोत्सव, मई माह में कोरिया में मनाया जाता है।

सरहुल उत्सव, मई माह में कुनकुरी– जशपुर में मनाया जाता है।

खैरागढ़ युवा संगीत नृत्य महोत्सव, जून माह में खैरागढ़ में मनाया जाता है।

दीपाडीह उत्सव जुलाई–अगस्त माह में सरगुजा में मनाया जाता है।

रथ उत्सव यात्रा, जुलाई, माह में रायपुर में मनाया जाता है।

चक्रधर महोत्सव, अगस्त–सितंबर माह में रायगढ़ में मनाया जाता है।

बारसुर महोत्सव अगस्त– सितंबर माह में दंतेवाडा में मनाया जाता है।

भोजली महोत्सव, अगस्त माह में बिलासपुर में मनाया जाता है।

पोला महोत्सव, अगस्त–सितंबर माह में मड़ियापार दुर्ग में मनाया जाता है।

खैरागढ़ महोत्सव, सितम्बर माह में खैरागढ़ में मनाया जाता है।

रायपुर दशहरा उत्सव, अक्टूबर माह में रायपुर में मनाया जाता है।

कुरुद दशहरा उत्सव, अक्टूबर माह में, धमतरी में मनाया जाता है।

भद्रकाली महोत्सव, अक्टूबर माह में बेमेतरा में मनाया जाता है।

राज्योत्सव, नवम्बर माह में रायपुर में मनाया जाता है।

राज्य स्तरीय पंथी नृत्य महोत्सव, दिसंबर माह में नवागढ़ बेमेतरा में मनाया जाता है।

पचराही उत्सव दिसंबर माह में गोवर्धन कबीरधाम में मनाया जाता है।

मधुबन महोत्सव उत्सव, दिसंबर माह में मगरलोड–धमतरी में मनाया जाता है।

खारून महोत्सव–, महादेवघाट–रायपुर में मनाया जाता है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख मेलाः–

सहसपुर मेला –जनवरी–मार्च माह में बेमेतरा में मनाया जाता है।

शिवरीनारायण मेला– महोत्सव, जनवरी–मार्च माह में जांजगीर–चांपा में मनाया जाता है।

मोतीरामपुर मेला –दिसंबर–जनवरी, माह में मुंगेली में मनाया जाता है।

कबीर पंथ मेला –जनवरी–फरवरी माह में लोलेसरा बेमेतरा में मनाया जाता है।

कबीर घाट मोहलाई मेला– फरवरी, माह में बालोद में मनाया जाता है।

गौरेया धाम मेला– फरवरी माह में बालोद में मनाया जाता है।

रुद्री मेला– फरवरी माह में धमतरी में मनाया जाता है।

पुन्नी मेला– फरवरी माह में राजिम–गरियाबंद में मनाया जाता है।

माता मावली मंडई मेला– फरवरी–मार्च माह में नारायणपुर में मनाया जाता है।

दामाखेडा मेला– फरवरी माह में दामाखेडा रायपुर में मनाया जाता है।

चंपारण मेला – मार्च–अप्रेल माह में चंपारण मेला जो राज्य की राजधानी रायपुर में चंपारण नामक स्थान पर लगता है।

नारायणपुर मेला – मार्च माह में नारायणपुर मेला छत्तीसगढ़ में बस्तर के क्षेत्रों में मनाया जाना वाला राज्य का एक और लोकप्रिय मेला है।

गरौदपुरी मेला –मार्च–अप्रैल माह में गिरौदपुरी बलौदाबाजार में मनाया जाता है।

गढ़बासला चौतराई मेला–अप्रैल माह में कांकेर में मनाया जाता है।

करियां धुरवा मेला– अप्रैल माह में महासमुंद में मनाया जाता है।

योगीदीप मेला–अप्रैल माह में केशला–बेमेतरा में मनाया जाता है।

सोमनाथ मेला –जुलाई–अगस्त माह में धरसींवा रायपुर में मनाया जाता है।

छत्तीसगढ़ के लोकनृत्यः–

सुआ नृत्य –यह नृत्य छत्तीसगढ़ अंचल में दीपावली के अवसर पर शिव–पावर्ती की उपासना तथा रांगो पूजा का नृत्य गीत है, लकड़ी या मिट्टी की 'सुअना' की मूर्ति को पुजाकर घेरकर नृत्य करती हैं, नृत्य घेरे में नारियाँ दो दलों में बँटी रहती हैं, एक दल 'सुअना' की आराधना में झुकता है, तो दूसरा खड़ा हो जाता है और सुअना के फेरे लगते रहते हैं।

डंडा या रहस नृत्य– यह नृत्य भी छत्तीसगढ़ अंचल में बहुत प्रसिद्ध है, यह भगवान कृष्ण की रासलीला के रूप में होली तथा दशहरा पर किया जाता है, इस सामूहिक नृत्य में पुरुष ही स्त्रियों जैसे स्वांग रचाते हैं तथा गोल घेरे में बिजली की गति से पाँव थिरकते दिखाई देते हैं।

राउत नृत्य– यह नृत्य भी छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है। राउत लोग ढोल, निशान, मोहरी, झाँझ आदि गण्डवा बाजे के साथ नर्तक चुस्त पहनावे के साथ मोरपंख की कलगी युक्त पगड़ी बाँधे हुए, एक हाथ में लोहे की फरी तथा दूसरे हाथ में लाठी लेकर नाचते हैं।

उराँव लोगों का सरहुल नृत्य –उराँव जनजाति का महत्वपूर्ण लोक नृत्य है। यह लोक नृत्य तथा गीत साल वृक्ष के पूजन से संबंधित है।

बार नृत्य –कंवर जाति में बारनृत्य का प्रचलन है, प्रत्येक तीसरे वर्ष बाद इसका आयोजन किया जाता है,।

घासियाबाजा नृत्य –यह नृत्य सरगुजा की घासी जाति का परम्परागत नृत्य है, इसमें शहनाई, ढपला, लौहाती आदि वाद्य यन्त्रों का उपयोग किया जाता है।

पंथी नृत्य –यह नृत्य छत्तीसगढ़ की सतनामी जाति द्वारा गुरु घासीदास के जन्म दिवस पर किया जाता है, जो माघ माह की पूर्णिमा को किया जाता है।

'ककसार' मुड़िया जनजाति का धार्मिक नृत्य – मुड़िया लोगों में यह माना जाता है कि लिंगादेव (शंकर) के पास अठारह बाजे थे और उन्होंने सभी बाजे मुड़िया लोगों को दे दिए। इन्हीं वाद्यों के साथ ककसार पर्व में लिंगादेव को प्रसन्न करने के लिए गाते–बजाते हैं।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक गीतः–

ददरिया – ददरिया गीतों को छत्तीसगढ़ी लोकगीत का राजा कहा जाता है।

रास नृत्य गीत –रहस नृत्य होली के समय का मृत्यु गीत।

गौरा गीत– माँ दुर्गा की स्तुति में गाए जाने वाला लोक गीत है, जो नवरात्रि के समय गाया जाता है।

जंवारा गीत –नवरात्रि के समय गाया जाने वाला माता का गीत ।

माता सेवा गीत – चेचक को माता माना जाता है, इसकी शांति के लिए माता सेवा गीत गाया जाता है।

चेतपरब और धनकुल गीत – बस्तर क्षेत्र का लोकगीत।

लेंजा गीत–बस्तर में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र का लोकगीत।

रेला गीत –मुरिया जनजाति का लोकगीत।

छेरता गीत – मुरिया युवक–युवतियों का सम्मिलित नृत्य ।

बार नृत्य गीत –कंवर जनजातियों का नृत्य गीत ।

बिलमा गीत – बैगा जनजातियों का मिलन नृत्य गीत है।

पंडवानी गीत – छत्तीसगढ़ी वीर रस का लोक नृत्य गीत जिसे 'लोक बैले' भी कहा जाता है।

गौर नृत्य गीत –बाईसन हार्न माड़िया जनजातियों का नृत्य गीत है।

गेड़ी नृत्य गीत – गोंड़ युवकों का खेल नृत्य ।

गोंचो नृत्य गीत –गोंड़ों का नृत्य ।

गोंडों नृत्य गीत – गोंड़ जनजातियों का बीज बोते समय का नृत्य ।

रीना नृत्य गीत –गोंड़ तथा बैगा स्त्रियों का दीपावली के समय का नृत्य गीत।

सींग माड़िया नृत्य गीत – बस्तर के बैनेले भू–भाग में माड़िया आदिवासियों का नृत्य है।

शैला नृत्य गीत –सैला एक मण्डलाकार लोक नृत्य गीत है, प्रारम्भ गुरु एवं प्रभु की वंदना से करते हैं।

भड़ौनी गीत– विवाह के समय हंसी मजाक करने के लिए गाया जाने वाला गीत है।

नागमत गीत – नागपंचमी के अवसर पर गाया जाता है।

दहकी गीत –होली के अवसर पर अश्लीलतापूर्ण परिहास में गाया जाने वाला लोकगीत।

देवार गीत –देवार जाति द्वारा घुँघरू युक्त चिकारा के साथ गाया जाने वाला गीत।

बांस गीत – राउत जाति का प्रमुख गीत।

मड़ई गीत – रावत जाति का नृत्य।

छत्तीसगढ़ के लोकनाट्यः–

1. नाचा एवं गम्मत – छत्तीसगढ़ का प्रमुख लोकनाट्य है। नाचा के अन्तर्गत 'गम्मत' का विशेष महत्व होता है। प्रहसनात्मक शैली में रचित इन गम्मतों नाचा का आयोजन किया जाता है। छत्तीसगढ़ की पहली नाचा पार्टी रेवलीनाचा पार्टी है जिसका गठन 1928 में किया गया था।

2. भतरानाट – भतरा नाटं बस्तर में उड़ीसा से आया है इसलिए कुछ लोग उसे उड़िया नाट भी कहते हैं। नाट की कथावस्तु पौराणिक प्रसंग ही है।

4. चंदैनी गोंदा – लोरिक चंदा की प्रेमगाथा को मूलरूप में 'राऊत' जाति के लोग गाते हैं। इसके साथ चंदैनी गोंदा नाट्य के रूप में प्रचलित है।

5 मावोपाटा– बस्तर के मुरीया जनजाति का पारम्परिकता के साथ मंच पर शिकार नृत्य को प्रस्तुत करते हैं।

6 दहीकांदो– छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के मध्य दहीकांदो एक लोकप्रिय लोकनाट्य है।